International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 821-823

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 821-823
www.allresearchjournal.com
Received: 18-08-2015
Accepted: 19-09-2015

अशोक कुमारी
पी. एच.डी., बौद्ध अध्ययन विभाग
दिल्ली विश्विद्यालय

Correspondence
अशोक कुमारी
पी. एच.डी.ए बौद्ध अध्ययन विभाग
दिल्ली विश्विद्यालय

गौतम बुद्ध एवं डॉ. अम्बेड़कर के शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

अशोक कुमारी

भारत प्राचीन समय से ही विविधताओं का देश रहा है। इसमें प्राचीन समय से ही वैचारिक संघर्ष चलता आ रहा है। विभिन्न विचारधाराओं के लोगों ने अपने–अपने मत का प्रचार प्रसार किया है। जैसा कि हम जानते हैं कि भारतवर्ष में महान पुरूषों के जन्म व जीवन की घटनाओं को प्रायः आश्चर्यचकित कर देनेवाली घटनाओं से महिमा मंडित किया जाता है। देवी–देवताओं, अवतारों एवं पीर पैगंबरों के जीवन चरित एक से एक ऐसी घटनाओं से भरे पडे हैं, जिनके न सिर है न पांव। हमें जीवन चरित लिखते समय सही और सच्ची बातें ही लिखनी चाहिए और खास तौर पर ऐसे महापुरूषों की जिन्होंने आजीवन पाखंड एवं आडंबर के विरूद्ध लड़ाई लड़ी है। गौतम बुद्ध एवं बाबा साहेब डॉ अंबेडकर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया है। हमने जाना है कि बुद्ध एवं अंबेडकर के शैक्षिक विचारों में क्या समानताएं हैं। ऐसा क्या कारण था कि डॉ अंबेडकर ने तथागत को अपना प्रथम कबीर को दूसरा एवं ज्योतिराव फूले को तीसरा सामाजिक गुरु माना।

भारत भूमि विभिन्न दार्शनिक विद्वानों एवं सामाजिक चिंतकों की धारा रही है। इन विद्वानों में तथागत बुद्ध का स्थान सर्वोपरि है। क्योंकि बौद्ध दर्शन विश्व के प्राचीनतम दर्शनों में से एक है, जो मानवतावादी सिद्धांत पर आधारित है और जैसा कि भारत रत्न डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि मानव जाति के लिए केवल बुद्ध का रास्ता ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वमान्य है, जो मानव जाति के संपूर्ण कल्याण हेतु बनाया गया है।

उनका कहना था कि पहले हम भारतीय हैं और बाद में कुछ और जबकि तत्कालीन नेताओं का मानना था कि हम हिंदू हैं। बाबा साहेब ने इस तरह की संकीर्ण मानसिकता को जड़ से उखाड़ने का निश्चय किया है और टुकड़ों में बंटे हुए देश को एक अखंड भारत के रूप में राष्ट्रीयता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। उनकी धारणा राष्ट्रीयता को कायम रखने की थी। यही कारण था कि 1936 में की गई घोषणा '' मैं एक हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूं यह मेरे वश की बात नहीं, लेकिन मैं एक हिंदू के रूप में हरगिज नहीं मरूंगा।'' अतः उन्होंने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में 14 अक्तुबर 1956 में नागपुर की पावन धारा (जहां प्राचीन समय में बौद्धों का केंद्र रहा था) में 5 लाख अनुयायिों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण करके भारत को उसकी अपनी विरासत भेंट की, इसके साथ ही उन्होंने अपने मूल भारतीय होने का भी परिचय दिया।

भारतवर्ष बौद्ध कालीन समय से अपनी विद्वता के कारण विश्व गुरु माना जाता रहा है। इसका मुख्य कारण था यहां की शिक्षा और विहारों की व्यवस्था। बुद्ध के समय यहां नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला इत्यादि प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र हुए हैं। जिनमें विश्वभर से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इन विश्वविद्यालयों में पढ़ना गौरव की बात समझी जाती थी। यह बुद्ध की ही दी हुई शिक्षाओं का असर था कि चीनी यात्री फाह्यन अपने संस्मरण में लिखता है कि बड़े आश्चर्य की बात है कि भारतीय लोग इतने अधिक चरित्रवान हैं कि वहां की स्त्रियां आधी रात्रि में अपने गहनों से सुसज्जित होकर कहीं भी निःसंकोच आ जा सकती हैं।

डॉ. अंबेडकर तथागत को अपना आदर्श मानते थे। उन्होंने बौद्ध दर्शन का गहनता से अध्ययन किया। वे बौद्ध धर्म की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुंचाना चाहते थे। उनका मत था कि तथागत बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षाओं को यदि वर्तमान समय में लागू किया जाए तो भारत फिर से न केवल सोने की चिड़िया अपितु विश्व गुरु बन जाएगा। उनके इन्हीं विचारों का परिणाम था कि उन्होंने तथागत की बहुत सी शिक्षाओं, नियमों एवं सिद्धांतों को अपने द्वारा प्रदत्त भारतीय संविधान में सम्मिलित किया, जो आज हमें भारत में चैन की सांस लेने के लिए स्वच्छंद वातावरण देने का प्रयास कर रहा है।

डॉ. अंबेडकर अपने समय के भारत के सबसे बुद्धिमान एवं प्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। वे एक बहुत अच्छे प्रबंधक, कानूनवेत्ता, ही नहीं अपितु आज तक सामाजिक चिंतक एवं दूरद्रष्टा थे। यह उनकी दूर दृष्टि का ही परिणाम था कि उन्होंने संपूर्ण भारतीय इतिहास का गहनता से अध्ययन किया और उसकी तुलना विश्वभर के इतिहास से की। उनका मानना था कि जब कुदरत ने कोई किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जैसे वायु सभी को समान रूप से प्राप्त होती है, सूर्य का प्रकाश सभी को समान रूप से प्राप्त होता है उसी तरह जल, पृथ्वी एवं खुला आसमान सभी के लिए समान है। वह किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करता। फिर ये भेदभाव क्यों हैं वे समझ गए कि यह जरुर इंसानों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया ढोंग हैं, जिसका कहर निम्न जातियां सदियों से ढोती आ रही हैं। अतः उन्होंने इस दासता को जड़ मूल समाप्त करने का निर्णय किया। जिसके परिणाम स्वरूप आज भारतीय संविधान मूल रूप से समता, बंधुता एवं न्याय रूपी स्तंभों पर खड़ा है।

अतः हम कह सकते हैं कि तथागत बुद्ध डॉ. अंबेडकर के शिक्षा संबंधी विचारों में न केवल समानता है बल्कि एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। इनमें से एक दर्शन का सैद्धांतिक पक्ष है, जो विचार प्रधान करता है वहीं दूसरा पक्ष भारतीय संविधान के रूप व्यवहारिक शिक्षा की वकालत करता है।

तथागत बुद्ध को सम्पूर्ण एशिया का ज्योति पुंज माना जाता है। तथागत ऐसी महान विभूति हुए है। जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को समता मैत्री एवं न्याय का पाठ पढाया, भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के अनुसार केवल बुद्ध का रास्ता ही सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वमान्य है। उनके अनुसार तथागत सम्बुद्ध का मध्यम मार्ग ही मानवता को दरिद्रता एवं विनाश से बचा सकता है।

इन्हीं की वकालत बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी ने आजीवन की है । वे मानते थे धर्म इंसानों के लिए हैं । इंसान धर्म के लिए नहीं, धर्म से मनुष्य में संस्कार आदि उत्पन्न होते हैं। डॉ. अम्बेड़कर ने अनिवार्य तत्व माना है।

12 फरवरी 1938 में अम्बेडकर ने एक सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि– चरित्र के बिना शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। शिक्षा के दुधारा शस्त्र होने की वजह से उसे चलाना खतरनाक है। चरित्र और विनयहीन सुशिक्षित मनुष्य पशु से भयंकर होता है। अगर सुशिक्षित मनुष्य की शिक्षा गरीब जनता के कल्याण के विरूद्ध होती है तो वह समाज के लिए अभिशाप बन जाएगा। ऐसे सुशिक्षितों को धिक्कार हो। शिक्षा की अपेक्षा चरित्र अध्कि महत्व का है। युवकों की धर्मविरोधी प्रवृति देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि कुछ लोग कहते हैं– धर्म अफीम की गोली है। लेकिन यह सच नहीं। मुझमें जो कुछ गुण विद्यमान हैं या मेरी शिक्षा के कारण सामाजिक कल्याण हुआ, वह मुझमें विद्यमान धर्मिक भावना के कारण ही है। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर चाहते थे कि शिक्षा नीतिपरक हो जो मनुष्य को एक दूसरे के साथ उचित व्यवहार करने के लिए निर्देशित करे।

डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय एवं पाश्चात्य के दोनों के साहित्य, इतिहास, समाज एवं राज व्यवस्था का गहनता से अध्ययन किया। तत्पश्चात् उन्होंने पाया कि भारत के शूद्र अतिशूद्र दुनिया भर के मानवों की तुलना में पशुतुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हों जिसके लिए भारत की सामाजिक व्यवस्था और परम्परागत रूढियां ही जिम्मेदार थी। उसके उपाय के लिए उन्होंने शिक्षा को ही एकमात्र हथियार माना और उन्होंने कहा था कि ''दास को उसकी दासता के बारे में अनुभव करा दिया जाये तो वह स्वयं विद्रोह कर उठेगा तथा शिक्षा ही एकमात्र ऐसा मूलमंत्र है जिसके सम्प्रेषण से दलित वर्ग अपनी दासता को अनुभव कर सामाजिक असमानता के विरूद्ध संघर्ष कर सकते हैं व अपने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।'' इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा पर बल दिया। उस समय अछूत छात्रों को विद्यालयों में प्रवेश मुश्किल से दिया जाता था। इस प्रकार समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग शिक्षा से वंचित रह गया। परिणामतः सबसे बड़ा खामियाजा देश को उठाना पड़ा।

डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण भारत वर्ष में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर देश को मजबूत करना चाहते थे। उनकी मंशा थी कि सामाजिक विसंगतियों को दूर कर देश में नवीन आयामों की स्थापना की जाए। उसके लिए उन्होंने प्रयास भी किए। उन्हें ज्ञान था कि असमानता के मूल तत्व साहित्य में छिपे हुए हैं। इसलिए उन्होंने संस्कृत भाषा को राज भाषा बनाने की वकालत की थी। क्योंकि यदि संस्कृत को राजभाषा बना दिया जाता तो सामाजिक विसंगतियों को समझने में देर नहीं लगती। किन्तु उनका प्रयास पूर्ण रूप नहीं ले सका। अंततः हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित किया गया। यदि संस्कृत भाषा को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिल जाता तो जन–जन सामाजिक विसंगतियों के मूल तक पहुंच कर उसे उखाड़ने में सक्षम हो सकता था। फिर भी डॉ. अम्बेडकर ने सभी समुदायों को धर्मिक स्वतंत्रता अर्थात् किसी भी मत में आस्था रखने, पूजा–पाठ करने, प्रचार करने, संस्थाएं संगठित करने और शिक्षा देने की स्वतंत्रता का अधिकार दिया। बशर्ते उससे सामाजिक शान्ति व्यवस्था और नैतिक आदर्शों का उल्लंघन न होता हो। उन्होंने प्रावधान किया कि अपने खर्च पर धर्मार्थ संस्थाओं, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं, स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना और उनमें अपने धर्म के पालन करने का अधिकार स्थापित किया। संविधान में अल्पसंख्यक वर्गों में धर्म, संस्कृति और निजि कानून के संरक्षण और उनकी शिक्षा, भाषा, धर्मार्थ संस्थाओं के प्रोत्साहन तथा राज्य और स्वायत संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले अनुदान में देय अंश के संरक्षण के लिए पर्याप्त व्यवस्था कायम की। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर चाहते थे कि देश में शिक्षा का अधिकार सभी को समान रूप से होना चाहिए जिससे देश का विकास सही रूप से हो सके।

डॉ. अम्बेडकर उसी तरह चमके जैसे वाशिंगटन नीग्रो लोगों के मध्य में चमके। डॉ. अम्बेडकर बखूबी जानते थे कि बिना शिक्षा नौकरी नहीं मिल सकती थी और न ही जागृति आ सकती थी। राजनैतिक और नागरिक अधिकारों के लिए एकता कायम नहीं की जा सकती थी। शिक्षा ही ऐसा माध्यम थी जिससे सारी समस्याएं अपने आप समाप्त हो सकती थी। उनका मानना था कि ज्यादा से ज्यादा शिक्षा और ज्यादा से ज्यादा उन्नति के अवसर उपलब्ध होने चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने बच्चों को पढ़ाने पर बल दिया ।

डॉ. अंबेडकर तथागत को अपना आदर्श मानते थे। उन्होंने बौद्ध दर्शन का गहनता से अध्ययन किया। वे बौद्ध धर्म की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुंचाना चाहते थे। उनका मत था कि तथागत बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षाओं को यदि वर्तमान समय में लागू किया जाए तो भारत फिर से न केवल सोने की चिड़िया अपितु विश्व गुरु बन जाएगा। उनके इन्हीं विचारों का परिणाम था कि उन्होंने तथागत की बहुत सी शिक्षाओं, नियमों एवं सिद्धांतों को अपने द्वारा प्रदत्त भारतीय संविधान में सम्मलित किया, जो आज हमें भारत में चैन की सांस लेने के लिए स्वच्छंद वातावरण देने का प्रयास कर रहा है।

अतः हम कह सकते हैं कि तथागत बुद्ध डॉ. अंबेडकर के शिक्षा संबंधी विचारों में न केवल समानता है बल्कि एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। इनमें से एक दर्शन का सैद्धांतिक पक्ष है, जो विचार प्रदान करता है वहीं दूसरा पक्ष भारतीय संविधान के रूप व्यवहारिक शिक्षा की वकालत करता है।

प्रस्तुत विवेचना के आधार पर हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार आज मनुष्य संस्कारविहिन हो रहा है वह पाश्चात्यकरण की अंधी दौड दोड़ रहा है ऐसे में उसके लिए तथागत सम्बुद्ध द्वारा प्रतिपादित शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है। उन्हीं का पालन करवाने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में प्रावधान करके ऐसा करने का प्रयास किया।

भारतीय संस्कृति प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम संस्कृति है। जिसको कुछेक संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों ने समय–समय पर धूमिल करने का प्रयास किया। लेकिन जिस प्रकार सारी नदियां समुद्र में जाकर एक हो जाती है ठीक उसी प्रकार ऐसी संकीर्ण मानसिकता का ज्यादा प्रभाव भी भारतीय मूल संस्कृति पर नहीं पड़ता । जिसे पुनः जीवित करने के लिए समय–समय पर महापुरुषों ने प्रयास किया है। चौथी शताब्दी ई.पूर्व में हुए तथागत बुद्ध को पुनः शुद्ध रुप में प्रस्तुत करने का प्रयास भी डॉ. अम्बेडकर ने किया है ।
अतः तथागत बुद्ध एवं डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में पहले से ही अधिक प्रासंगिकता है।